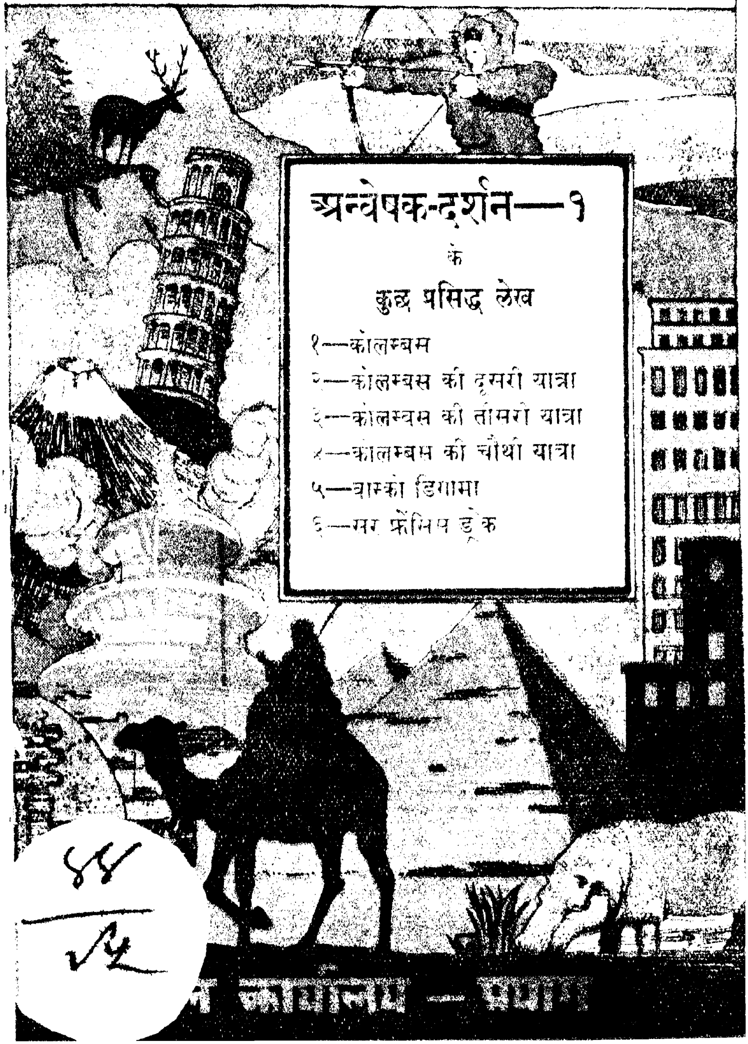
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—४४



अन्वेषक-दर्शन—१

के

कुछ प्रसिद्ध लेख

४४/५५

कार्यालय — प्रयाग

अप्रैल, १९४३] # देश-दर्शन [वैसाख १९९९

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष ४] ## अन्वेषक-दर्शन—१ { संख्या १०
पूर्ण संख्या ४४

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

CHECKED 1973
Initial

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This copy As. -/6/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

विषय-सूची

अन्वेषक-दर्शन

कोलम्बस

क्रिस्टाफर कोलम्बस सन् १४४५ ईस्वी में जेनोआ के एक निर्धन पर कुलीन घराने में पैदा हुआ था। कोलम्बस का पिता रूई धुनने का काम करता था पर कोलम्बस की रुचि भूगोल की ओर अधिक थी। इटली के पेविया विश्व विद्यालय में उसने भूगोल, रेखा गणित, ज्योतिष और जल विद्या की शिक्षा प्राप्त की। १४ वर्ष की अवस्था में नाव चलाने का काम आरम्भ किया इसके बाद उसने अपना अधिकतर जीवन समुद्र-यात्रा में बिताया।

कोलम्बस का विश्वास था कि पृथ्वी गोल है और पश्चिम की ओर जहाज ले जाने पर भी अन्त में वह हिन्दुस्तान पहुँच जायगा। पूर्व की ओर से जाने का मार्ग मुसलमानों और इसाइयों की शत्रुता से बन्द हो चुका था। लेकिन उस समय के लोग कोलम्बस की बातें सुन कर हंसते थे और उसे पागल समझते थे। फिर भी कोलम्बस अपने निश्चय पर अटल रहा। अन्त में स्पेन के राजा और रानी ने कोलम्बस की सहायता की।

१४६२ के अगस्त मास में ६० मल्लाहों के साथ तीन जहाज़ लेकर कोलम्बस ने नई दुनिया के लिये प्रस्थान



महारानी ईसाबेला।

किया। कोलम्बस सब से बड़े (१०० टन के) जहाज़ पर सवार था। पिन्टा और नीना दो और छोटे (५० टन के)

जहाज उसके साथ थे। जहाज़ पहले दक्षिण की ओर चले क्योंकि दक्षिणी स्पेन से हवा इसी दिशा में चलती थी। कुछ ही दिनों में सब लोग केनरी द्वीप में पहुँच गये।

यहां कोलम्बस ने जहाज़ों की मरम्मत करवाई और रसद, पानी और लकड़ी भरकर छठी सितम्बर को मन्द-वायु में पश्चिम की ओर चल दिया। तीन दिन में स्थल का अन्तिम चिह्न भी छिप गया। बहुत से मल्लाह फिर रोने लगे। वे समझते थे कि इसके बाद फिर जीवन में अब कभी स्थल देखने को न मिलेगा। उन की उदासी दूर करने के लिये कोलम्बस ने नये देशों का विवरण कह सुनाया और बतलाया कि वहां पहुंच कर किस प्रकार उन सब को धन और यश मिलेगा। अपने उदाहरण से भी उसने मल्लाहों में नया जीवन फूंक दिया। इस के साथ ही वह उन्हें तसल्ली देने के लिये दो तरह के रोज़नामचे रखता था। अपने निजी रोज़नामचे में वह प्रतिदिन की यात्रा की ठीक ठीक दूरी लिखता था। लेकिन दूसरी डायरी में वह जितनी दूरी तय करता था उस से कम दिखलाता था जिस से मल्लाह यह न समझें कि वे अपने देश से बड़ा दूर पहुँच गये हैं। पर १३

सितम्बर को कुतुबनुमे की सुई में अन्तर पड़ने लगा। १५ तारीख़ की रात को एक तारा टूटा। इसके बाद ही सारागोसी (बहुत ही ब्यास का समुद्र) मिला। इन सब बातों से मल्लाह लोग बहुत डर गये। वे कोलम्बस से लौटने के लिये बार बार प्रार्थना करने लगे। कोलम्बस ने उन्हें तसल्ली तो बहुत दी, लेकिन अपने निश्चय पर अटल रहा। एक बार मल्लाहों ने सोचा कि कोलम्बस को समुद्र में ढकेल दें और घर लौट कर कह दें कि वह तारों को देखते देखते अपने आप समुद्र में गिर पड़ा। कोलम्बस उनकी साज़िश समझ गया। साम-दाम दण्ड-भेद से काम लेने लगा। भाग्य से १८ तारीख को बहुत सी चिड़ियां दिखाई दीं। लोगों में फिर नई आशा आ गई। २० तारीख़ को फिर चिड़ियां दिखाई दीं लेकिन स्थल न मिलने से बड़े उदास हो गये। ट्रेड हवाओं की स्थिरता उन्हें और भी डराने लगी। उन्होंने समझ लिया कि सारी प्राकृति उन्हें नाश की ओर खींचे ले जा रही है। २५ तारीख को पिज़ाने "स्थल, स्थल" चिल्ला उठा लेकिन दूसरे दिन फिर स्थल का पता न था। चिड़ियां बराबर मिलती रहीं। अक्टूबर को बहुत छोटी चिड़ियों

के दर्शन हुये। जिससे स्पष्ट था कि अब स्थल दूर नहीं है। आगे बढ़ने पर चट्टान पर रहने वाली हरी मछली दिखाई दी। छोटे छोटे फलों से लदी हुई एक कांटेदार टहनी मिली। ११ तारीख को नक्काशी की हुई छड़ी और चौकी भी देखी गई। अब तो किसी का सन्देह न रहा। रात में कोलम्बस ने चलता हुई रोशनी देखी। २ बजे रात को रोड्रिगो नामी मल्लाह ने पहली बार स्थल देखा। सबेरा होते ही समतल मैदान सुन्दर जल और हरे पेड़ दिखाई देने लगे। कोलम्बस और मल्लाहों को जो खुशी थी उसका वर्णन करना कठिन है।

१२ अक्टूबर को कोलम्बस सुसज्जित हो अपने अफसरों के साथ स्थल पर उतरा। ईश्वर को धन्यवाद देकर उसने इस द्वीप का नाम सैन सल्वाडार (आज कल बहमा द्वीप समूह में यह द्वीप वाटलिंग द्वीप कहलाता है) रक्खा और फर्डीनेन्ट व ईसाबेला के नाम से स्पेन में मिला लिया। सभी लोग खुशी के मारे भूमि को चूमने लगे। जो लोग कुछ दिन पहले विद्रोह पर उतारू थे वे कोलम्बस से क्षमा मांगने लगे। सभी ने कोलम्बस को स्पेन का राजा का प्रतिनिध स्वीकार किया। अपना

प्रेम प्रगट करने के लिये मल्लाह लोग कोलम्बस को घेरे हुये थे। उनमें से कुछ कोलम्बस के हाथ चूम रहे थे। मूल निवासी इन जहाजों को तट की ओर आते देख जंगलों में भाग गये। लेकिन जब उन्होंने देखा कि अजनबी लोग उनका पीछा नहीं कर रहे हैं तो वे साहस करके फिर लौट आये। वे स्पेनियर्ड लोगों के चमकीले हथियार रङ्ग बिरङ्गे कपड़े देख कर दंग थे। उन्होंने इशारे से स्पेनिस लोगों की पूजा की। फिर उन्होंने अपने अतिथियों की दाढ़ी को टटोला और उन के गोरे चमड़े पर हाथ फेरा वे समझते थे कि उनके अतिथि स्वर्ग से उतरे हैं।

कोलम्बस ने इन ताम्रवर्ण, भोले-भाले लोगों से दया का बर्ताव किया। ये लोग लकड़ी के भाले लिये हुये थे। इन के पास लोहे की कोई चीज़ न थी। जब इन्हें तलवार दिखाई गई तो एक ने इसे धार की ओर से पकड़ कर अपना हाथ काट लिया। कोलम्बस ने इन्हें लाल टोपी, शीशे की गोलियां और छोटी छोटी घंटियां भी दीं। इन चीज़ों को पाकर वे बड़े प्रसन्न हुए। कोलम्बस के लोगों ने प्रसन्नता से स्थल पर ही समय बिताया। दूसरे दिन

कुछ द्वीपवासी तैर कर कुछ खुदी हुई नावों पर सवार होकर जहाज़ों पर कते हुए सूत की गेंद पालतू तोते और कसावा रोटी बदले में भेंट देने को ले आये। पर लाभी स्पेनियर्ड लोगों की नज़र सोने के छोटे छोटे आभूषणों पर लगी थी जो ये लोग नाक में पहने हुये थे। पूछने से पता लगा कि यह क़ीमती धातु दक्षिण के किसी देश में पाई जाती है। इस द्वीप को निर्धन जान कर कोलम्बस आगे बढ़ा। साथ में उस ने पानी लकड़ी और राह बतलाने के लिये सात द्वीपवासी ले आये। कोलम्बस समझता था कि वह हिन्दुस्तान के पास वाले द्वीपों में विचर रहा है इस लिये उस ने इन लोगों को इंडियन नाम से पुकारा। सुन्दर बहमा द्वीपों से गुज़रता हुआ कोलम्बस क्यूबा द्वीप की ओर बढ़ा। क्यूबा द्वीप को वह जियांग या जापान समझता था। तट पर पहुंच कर उसने भीतर की ओर ऐसे दो मनुष्यों को भेजा जो यहूदी कोल्डिया और अरबी भाषा जानते थे। पर इन की भाषा कोई न समझ सका तब इंडियन साथी ने स्पेन वालों की तरफ़ में एक व्याख्यान दिया। क्यूबा के रहने वाले भी सीधे-सादे थे। ये लोग

तम्बाकू भी पीते थे और सूंघते थे। कोलम्बस ने इस तट का चक्कर काटने में कई दिन लगाये। पिंज़ोन एक बार सोने की तलाश में कुछ समय के लिये अलग चला गया। इस बीच में कोलम्बस का ध्यान हेयटी द्वीप की ओर गया और कुछ ही दिन में वह वहां जा पहुँचा।

और द्वीपों के पहाड़ों से हेयटी द्वीप के पहाड़ कहीं अधिक ऊँचे थे। सघन बन के बीच में पहाड़ियां उठी हुई थीं। पहाड़ धीरे धीरे उजाऊ मैदानों और हरे खेतों में बदल गये थे। रात की रोशनी और दिन के धुएं से भी यही पता लगता था कि यह द्वीप ख़ूब घना बसा है। इस द्वीप के तट के मल्लाहों को उसी तरह की मछलियां मिलीं जो स्पेन में पाई जाती हैं। रात को चिड़ियों के स्वर से भी यह मालूम पड़ा मानों स्पेन की चिड़ियां बोल रही हैं। दो एक जगह द्वीप की बनावट भी स्पेन के समान थी। इसी से कोलम्बस ने इसका नाम स्पेनोला रख दिया। जो हिस्पेनिओला लिखा जाता है। इसी को बिगाड़ कर अधिकतर लोग हेयटी कहते हैं। यहां के निवासी भी स्पेन वालों को देख कर

भागने लगे। कुछ मल्लाह उन के पीछे भेजे गये जो केवल एक स्त्री पकड़ कर लाने में समर्थ हुये। इस स्त्री के साथ बड़ा अच्छा बर्ताव हुआ। अन्त में वह सुन्दर वस्त्र और गहनों से सजा कर भेजी गई। यह समाचार बिजली के समान द्वीप में फैल गया। फिर क्या था द्वीपवासियों की भीड़ जहाज़ के पास आने लगी। ये लोग सोने के आभूषण पहने थे। पर स्पेन वालों ने छोटी छोटी चीज़ों के बदले में उनसे ये गहने ले लिये। कोलम्बस ने उनके सरदार से मित्रता करली। इन का सरदार भी नंगा था और यही समझता था कि ये लोग स्वर्ग से आये हैं। इस सरदार ने कोलम्बस को अपने नगर में आने के लिये निमन्त्रण दिया। जहाज़ रात में पहुँचा और रेतीले टीले से टकरा गया। इस दुर्घटना का समाचार सुनकर सरदार रोने लगा। उस ने अपने आदमी और नावें कोलम्बस की सहायता के लिये भेजीं। टूटा फूटा सामान उस ने एक मकान में रखवा दिया और उस पर पहरा बिठा दिया। किसी आदमी ने ज़रा सी भी चीज़ चुराने छिपाने की कोशिश नहीं की।

यही नहीं, उन्होंने इस प्रकार सहायता दी मानों अपना ही जहाज़ टूट गया हो। कोलम्बस ने लौट कर अपने राजा से कहा था कि ये लोग अपने ही समान अपने पड़ोसी को प्यार करते हैं। मैं सौगन्द खा कर कहता हूँ कि दुनिया भर में न इनसे अच्छी कोई जाति है न कोई देश ही इन के देश से अच्छा है।

सरदार ने कोलम्बस की उदासी दूर करने के लिए सुन्दर भोजन करवाया और अपने मनोहर बगीचे में नाच करवाया। सरदार ने कोलम्बस के सिर पर सोने का ताज रक्खा और उस के इधर उधर सोने ही के आभूषण लटका दिये। मल्लाहों को भी उस ने अच्छी भेंट दी। जब सरदार ने देखा कि कोलम्बस सोने को बहुत चाहता है तो उस ने उसे ऐसा स्थान दिखलाने का भरोसा दिया जहां लोग सोने को उदासीनता से देखते हैं और जहाँ से वह (कोलम्बस) जितना सोना चाहे ले जा सकता है। सरदार के झंडों और दूसरी चीज़ों पर भी सोने का काम था।

सरदार ने अपने अतिथियों के रहने के लिये तीन बड़े बड़े घर खाली करवा दिये। इन लोगों में तेरे और

मेरे का भेद न था। कुछ स्पेन वालों ने प्रसन्न होकर यहीं ठहरने की इच्छा प्रकट की। दो छोटे जहाज़ों पर सब लोग वापिस भी नहीं जा सकते थे।

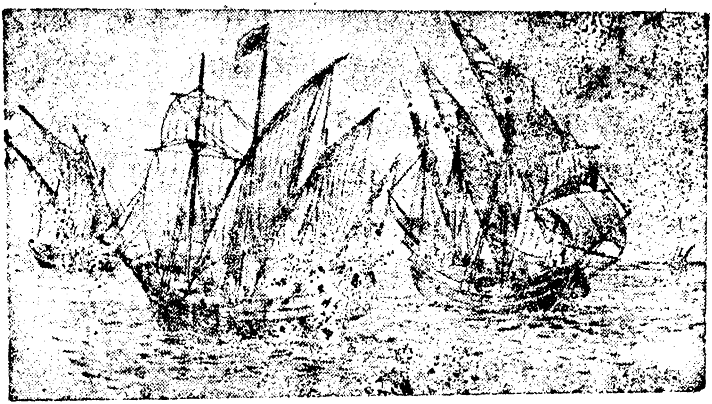
कोलम्बस ने टूटे जहाज़ की लकड़ी से एक क़िला बनाने और छोटी टोली यहीं छोड़ने की सोची। यह समाचार सुनकर सरदार अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसने अपने यहाँ क़िला बनाने की तुरन्त आज्ञा दे दी। उसने अपनी प्रजा से सब तरह की सहायता भी दिलवाई। पर इस भोले-भाले सरदार को स्वप्न में भी इस बात का पता न था कि इन भलाइयों के बदले उसे और उसके देशवासियों को दासता की बेड़ी पहननी पड़ेगी और दासता के ही घोर संकट में वह और उसके साथी सदा के लिये नष्ट कर दिये जायेंगे।

द्वीपवासियों की सहायता से १० ही दिन में क़िला बन कर तय्यार होगया। कोलम्बस को विदा करते समय कोमल हृदय ग्वाकनगेरी (सरदार) फूट फूट कर रोने लगा।

४ जनवरी सन् १४९३ ई० को कोलम्बस ने अपना जहाज़ पूर्व (स्पेन) की ओर मोड़ा। इस बार

ट्रेड हवायें सामने पड़ती थीं। रास्ते में एक तूफ़ान भी आया जिस से दोनों जहाज़ एक दूसरे से अलग हो गये। तूफ़ान में बचने की आशा न दिखाई दी। कोलम्बस ने यात्रा का हाल लिख कर एक पीपे में मोम से बन्द कर दिया। उसने पानी में इस भरोसे पर छोड़ दिया कि जहाज़ के डूब जाने पर भी यात्रा का हाल स्पेन वालों को मिल जावे। पर सौभाग्य से १६ फ़रवरी को एज़ोर्स द्वीप दिखाई देने लगे। दूसरे दिन जहाज़ किनारे से जा लगा। पर यहां पोर्चगोज़ ने छीनने की धमकी दी लेकिन २४ तारीख़ को फिर कोलम्बस का आगे बढ़ने की आज्ञा मिल गई। दो तीन दिन तक जहाज़ मज़े में चलता रहा इस के बाद तूफ़ान फिर चलने लगा। दूसरी मार्च को बादबान फट गया अब तो जहाज़ के डूबने में सन्देह ही न था। आँधी के साथ ही मूसलाधार पानी भी बरस रहा था। बीच में डरावनी बिजली चमकती थी पर इस रात को मल्लाह लोग "स्थल! स्थल!!" चिल्ला उठे। ४ मार्च को सूर्योदय के समय कोलम्बस ने अपने तईं को टेगस नदी के मुहाने पर देखा। पुर्तगाल से कोलम्बस को भलाई की आशा

न थी। पर दूसरा रास्ता ही क्या था ? विवश हो पुर्तगाल के तट पर ही शरण ली।



कोलम्बस के जहाज़।

जब लोगों ने जाना कि कोलम्बस नये देश से अपने जहाज़ में विचित्र मनुष्य और तरह तरह का धन लेकर आया है, तब तो टेगस के मुहाने पर भीड़ का ठिकाना न रहा। छोटे बड़े सभी लोग कोलम्बस को देखने और उसके मुंह से यात्रा का हाल सुनने के लिये आ गये। ८ मार्च को राजा की ओर से भी बधाई दी गई और अतिथि-सत्कार किया गया। राजा ने कोलम्बस

को अपने सामने दरबार में बिठाया और बड़े ध्यान से सारा हाल सुना। १३ मार्च को बड़े सम्मान के साथ कोलम्बस पुर्तगाल से विदा किया गया। १५ मार्च को साढ़े सात महीने बाद वह फिर पेलास बन्दरगाह में सकुशल लौट आया।

कोलम्बस के जहाज़ को देख कर सारा नगर खुशी से पागल हो गया। घंटे बजने लगे और दूकानें बन्द हो गईं। कोलम्बस उतर कर जलूस के साथ गिरजाघर में गया और ईश्वर को धन्यवाद दिया। कोलम्बस के प्रस्थान करने और लौटने में आकाश पाताल का अन्तर था। जाते समय सारा नगर शोक मना रहा था। पर इस समय के आनन्द का भी पारावार न था।

इस समय स्पेन के राजा और रानी बार्सिलोना नगर में थे। वहां पहुंचने में कोलम्बस को प्रायः एक महीना लगा। पर इस यात्रा में कोलम्बस का जगह जगह पर ऐसा स्वागत हुआ जैसा कि राजाओं का भी नहीं होता है। बार्सिलोना नगर में कोलम्बस की शान विजयी रोमन लोगों से कम न थी। सब से आगे सोने के आभूषण पहने और रंगे हुये छः इंडियन थे। इसके बाद ज़िन्दा



कैसाक अथवा मूल निवासियों का सरदार।

और अजीब जानवर व पौधे की सवारी निकली । इन के साथ ही इंडियन लोगों के ताज और हथियार वगैरह थे। इन के पीछे घोड़े पर सवार होकर कोलम्बस निकला । गलियों में भीड़ के मारे तिल रखने को जगह न बची। राजसिंहासन खुले मैदान में रक्खा गया । कोलम्बस को आते देख राजा रानी खड़े हो गये। कोलम्बस घुटनों के बल हुआ और उनके हाथ चूमने को हुआ पर उन्होंने ऐसा करने से रोका और उठा लिया। उन्होंने उसे अपने सामने बिठलाया । ऐसा सम्मान शायद ही किसी का हुआ हो । फिर कोलम्बस ने संक्षेप में यात्रा का हाल सुनाया । हाल सुनते सुनते सब की आंखों में खुशी के आंसू भर आये । सबों ने ईश्वर को धन्यवाद दिया ।

कोलम्बस को तरह तरह का सम्मान और धन मिला । जो दरबारी पहले कोलम्बस की हँसी उड़ाते थे वे ही आज उसका सम्मान करने में सब से आगे थे। खुशी के मारे सारा स्पेन फूला नहीं समाता था । पर यह खुशी केवल स्पेन ही में परिमित न रही वरन् इस खुशी की गूँज सारे सभ्य संसार में फैल गई ।

कोलम्बस की दूसरी यात्रा

कोलम्बस की दूसरी यात्रा पहली यात्रा से बिलकुल भिन्न थी। २५ सितम्बर को केडिज़ की खाड़ी में अपार भीड़ थी। तीन बड़े जहाज़ और १४ नावें जाने के लिए सजी हुई खड़ी थीं। पहले केवल १,००० मनुष्य साथ ले जाने का निश्चय किया गया था। लेकिन फिर कुछ स्वयंसेवकों को बिना वेतन पर जाने की आज्ञा मिल गई। कुछ लोग चोरी से जहाज़ पर आ डटे। इस प्रकार इस बार १,५०० मनुष्यों ने प्रस्थान किया। सबके चेहरे प्रसन्नता और आशा से चमक रहे थे। इनके सम्बन्धी भी खुश थे। वे जानते थे कि ये लोग धन, यश और आनन्द लूटने जा रहे हैं। जो इस बार इस यात्रा में शामिल न हो सके वे अपने को अभागा समझते थे।

उपनिवेश बसाने के लिए कुछ पालतू जानवर और दूसरा आवश्यक सामान भी जहाज़ों में भरा था। कोलम्बस को आज्ञा मिली थी कि वह अपनी शक्ति भर सभी उपायों से द्वीपनिवासियों को ईसाई बनाने का प्रयत्न करे। इसलिए इस बार १२ मिशनरी भी साथ

कर दिये गये। रास्ते में लकड़ी और पानी के लिए जहाज़ केनरी द्वीप में ठहरा। यहां से हिस्पेनिओला के लिए कुछ ज़िन्दा जानवर, पौधे और बीज भी ले लिये गये। १३ अक्टूबर को फिर स्थल ओझल हो गया। ट्रेड हवायें अनुकूल थीं। केरिब (मनुष्याहारी) लोगों के द्वीपों में पहुंचने के लिए जहाज़ का रुख दक्षिण-पश्चिम की ओर कर लिया गया। इस यात्रा में केवल एक तूफ़ान के बाद तीसरी नवम्बर को एक ऊँचा द्वीप दिखलाई पड़ा। चूँकि आज रविवार का दिन था इस लिए इसका नाम 'डोमिनिका' रक्खा गया। आगे बढ़ने पर दूसरे और द्वीप दिखाई दिये। ये सबके सब घने जंगलों से ढके थे। उधर से आने वाली हवा में बड़ी सुगन्धि थी। ऊपर तोते और दूसरे सुन्दर पक्षी उड़ रहे थे उत्तर की ओर बढ़कर कोलम्बस ने गाडालोप, सेन्टा-क्रूज़, वर्जिनद्वीप और पोर्टोरिको द्वीपों का पता लगाया। एक द्वीप के लोग बड़े खूँख्वार थे। वे अपने शत्रुओं को मार कर खा जाते थे और उनकी सुन्दर सुन्दर स्त्रियों को दासी बना लेते थे। एक दूसरे द्वीप की स्त्रियां बड़ी वीर और लड़ने वाली थीं कहा जाता है

कि वहां स्त्रियों का ही राज्य था। मनुष्य कभी कभी कुछ समय के लिए आते थे। इन स्त्रियों ने स्पेन वालों को बड़ा हैरान किया। इस प्रकार द्वीपों का चक्कर काटते काटते २२ नवम्बर को कोलम्बस हेयटी या हिस्पेनिओला के पूर्वी तट पर पहुंचा। २२ तारीख़ की शाम को नेविडाड क़िले के सामने जा ठहरा। अँधेरे में तट की चीज़ दिखाई नहीं देती थी। कोलम्बस ने अपने बिछुड़े हुए लोगों को सूचना देने के लिए बन्दूकें दग़वाईं। लेकिन फिर भी सन्नाटा ही बना रहा। आधी रात को कुछ इण्डियन एक नाव पर आये। इनसे पता चला कि कोलम्बस के चले जाने पर उसके देशवासियों ने इण्डियन लोगों की औरतों को ज़बरदस्ती भगाना और सोने का लूटना शुरू कर दिया। फिर इसी लूट के ऊपर उनमें आपस में भी फूट हो गई। कुछ लड़ मरे और कुछ इधर-उधर हो गये। उनकी यह दशा देख काओनावो नामी सरदार ने (जो ग्वाकनगारी से जलता था) क़िला जला दिया। ग्वाकनगारी ने अपने अतिथियों को बचाने की कोशिश की पर वह भी घायल कर दिया गया और उसका गांव जला दिया गया।

इस अशुभ स्थान को छोड़ कर कोलम्बस पश्चिमी तट की ओर बढ़ा और वहां उसने एक सुन्दर स्थान पर दूसरा नगर बसाया। अपनी महारानी के प्रति आदर प्रकट करने के लिए उसने इसका नाम ईसाबेला रक्खा। उपनिवेश को बसा कर वह क्यूबा द्वीप की ओर चला और उसने जमैका द्वीप का पता लगाया। सोने की खानों की खोज में जगह जगह टोलियां भेजी गईं। पर कोई बड़ी सफलता न हुई। सब लोग हिस्पेनिओला को लौट आये। लोभी स्पेनवासियों में असन्तोष बढ़ रहा था। वे बिना परिश्रम के ही एकदम धनी होने के लिए नये देश में आये थे। यहां उनको जंगलों और पहाड़ों में खानों का पता लगाना पड़ता था। खान का पता लग जाने पर भी मेहनत करनी पड़ती थी। फिर भी जितना वे चाहते थे उतना सोना उन्हें नहीं मिलता था।

जब खानों से एकदम अपार धन मिलने की आशा न रही तब इन लोगों की क्रूर दृष्टि द्वीपवासियों की ओर फिरी। द्वीपवासी अत्यन्त सीधे थे। वे ईश्वर को सबसे बड़ा मानते थे। लेकिन वे ज़ेमी (देवी) के द्वारा उसकी पूजा किया करते थे। हर घर में ज़ेमी की

शक्ति पर बड़ा भरोसा था। सब कामों की सिद्धि के लिये वे ज़ेमी की उपासना करते थे। ये लोग वनस्पति से औषधि बनाना भी जानते थे। साल में एक बार वे बड़ा उत्सव मनाते थे जिसमें ख़ूब नाच तमाशा होता था और ज़ेमी की पूजा की जाती थी। इन लोगों का विश्वास था कि इनका द्वीप दुनिया भर में सबसे पुराना है। इसी की गुफाओं से सूर्य और चन्द्रमा निकले हैं। इन गुफाओं की तीर्थ-यात्रा भी की जाती थी। इनके विश्वास के अनुसार एक गुफा से मनुष्यों की उत्पत्ति हुई जिन्होंने अप्सराओं से ब्याह किया। प्रलय के बारे में भी इनके यहाँ एक विचित्र कथा थी:—किसी समय द्वीप में एक बड़ा केसीक (सरदार) रहता था। जब उसके इकलौते बेटे ने विद्रोह किया तो पिता ने उसे मार डाला। पर जाति की प्रथा के अनुसार उसने अपने पुत्र का दाह-संस्कार किया। फिर उसने उसकी हड्डियों को एक तोमड़ी में भर झोपड़ी पर रख दिया। कुछ दिन बाद जब सरदार और उसकी स्त्री ने तोमड़ी खोली तो उसमें से कई मछलियाँ कूद पड़ीं। इस खबर को सुनकर चार छोटे बच्चों ने भी इस तोमड़ी को खोलना

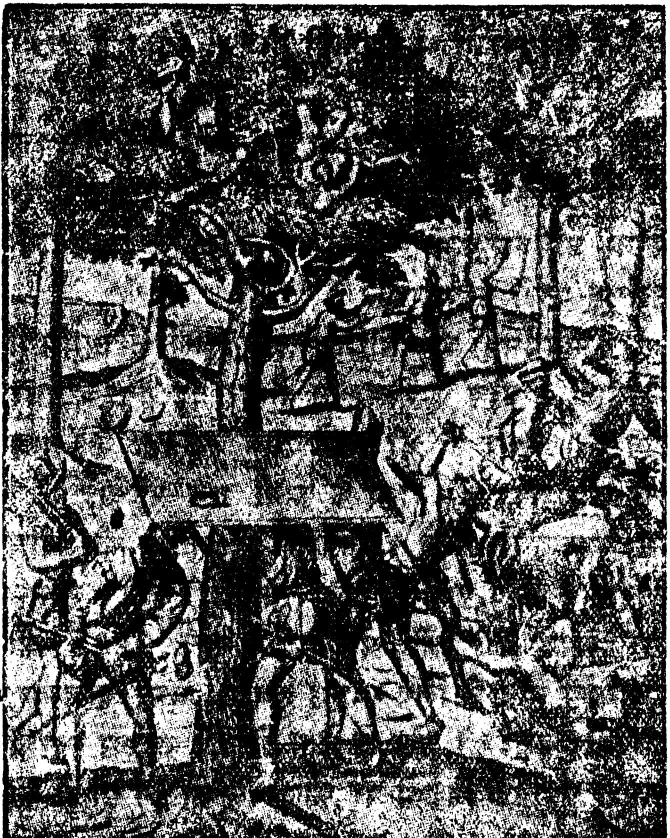
चाहा। लेकिन वह धरती पर गिरकर टूट गई। तब तो उससे महासागर उमड़ आया। यह बाढ़ इतनी फैली कि केवल पहाड़ों की चोटियाँ द्वीप के रूप में शेष बचीं।

मरने के बाद इनका विश्वास था कि अच्छी आत्मायें अपने प्यारे लोगों और इष्ट-मित्रों से 'सरगुआ' (स्वर्ग) में जा मिलती हैं। यहां वे छायादार सुगन्धित पुष्पकुँजों में सुन्दर स्त्रियों के साथ रहती हैं और स्वादिष्ट फलों का भोजन करती हैं। इनका देश इतना धनी था कि जीविका के लिये इन्हें अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ता था। इसी से वे अपना बहुत सा समय नाचने-गाने, देव पूजा और मनोविनोद में बिताते थे। ईमानदारी और अतिथि-सत्कार में इनसे बढ़कर दूसरी जाति का मिलना कठिन था। पर इनका छोटा द्वीप पाँच राज्यों में बँटा था। बीच के पहाड़ी भाग का सरदार स्पनवालों का कट्टर दुश्मन था। तट के पास वाला सरदार उनका परम भक्त था। स्पेन वालों को भगाने के लिये काओनावो ने दो और सरदारों को अपनी ओर मिला लिया। उससे लड़कर जीतना कठिन था। इसलिये उसके साथ विश्वासघात किया गया। घोड़े और चमकती हुई जंज़ीरें लेकर

कुछ स्पेन वाले उसके यहाँ मित्र बन कर रहने लगे। इस सरदार को घंटे से बड़ा शौक था। उसका बजना सुनकर वह स्पेनवालों को गिरजाघर में एकत्रित होते देख चुका था। वह समझता था कि घंटा अपने जादू से इतने लोगों को अपनी ओर खींच लेता है। यह घंटा लाने के लिये वह राजी हो गया। फौलादी जंज़ीरें यह कहकर उसे पहना दी गईं कि यह विलायती गहने हैं। उस बेचारे ने घोड़ा भी पहले नहीं देखा था। एक सिपाही ने उसे अपने पीछे तेज़ घोड़े पर बिठा लिया और कोलम्बस के सामने उसे ला छोड़ा। इस सरदार के कैद होते ही दूसरों में सामना करने का साहस न रहा। एक घोड़े को देखकर सैकड़ों इन्डियन भाग जाते। फौलादी हथियार भी उनके पास न थे। अब तो स्पेन वालों का भाग्य जग गया। इण्डियन लोगों को गुलाम बनाकर पाँच जहाज़ भर लिये गये और स्पेन में बिकने के लिये भेज दिये। जो बचे उन पर भारी भारी कर लग गये जो लोग खानों के पास रहते थे उनमें से १४ वर्ष के ऊपर हर मनुष्य को तीन तीन महीने के बाद पचास पचास रुपये का सोना देना पड़ता था।

सरदारों को इससे भी कहीं अधिक कर देना पड़ता था। जिन ज़िलों में सोना नहीं था वहाँ सोने के बदले १२½ सेर रुई देनी पड़ती थी। कर दे चुकने पर इण्डियन के गले में ताँबे का तमगा बांध दिया जाता था। जिसके वह तमगा नहीं बँधा होता था वह गिरफ्तार कर लिया जाता था और उसे सज़ा मिलती थी। इस गुलामी से बचने के लिये लोगों ने अपने मकई के खेत उजाड़ डाले और फलवाले पेड़ नष्ट करके वे जंगलों में भाग गये जिससे विदेशियों को भोजन भी न मिल सके। स्पेनवालों ने कुछ भोजन इधर-उधर से लूटा कुछ घर से मँगाया। फिर पहाड़ों और जंगलों में घुस घुस कर मुहम्मद तुग़लक़ की तरह लोगों का शिकार किया। गोली के अलावा हज़ारों अकाल और बीमारी से मर गये। जो बचे वे इतने दब गये कि प्रत्येक स्पेनवासी अकेले देश भर में बेखटके घूमता था। द्वीपवासी उसे अपने कंधों पर बिठा कर ले जाते थे।

फिर भोले भाले ग्वाकनगारी की बारी आई जो कोलम्बस का परम भक्त था। इस सरदार ने अतिथि-सत्कार के सामने अपना धन-जन सब कुछ फूँक दिया



वृक्ष पर चढ़े हुये मूल निवासियों पर हमला हो रहा है।

था। उसके लोगों को भी इतनी पीड़ायें दी गईं कि वह

उन्हें न देख सका और पहाड़ी निर्जन स्थान में जाकर शोक से मर गया। यदि स्पेनवालों को देखकर यह भोला भाला सरदार अन्धा न बन जाता और देशभक्त काओनावो का विरोध न करता तो स्पेन वाले देश पर अपना अधिकार कभी न जमा पाते और उसके देशवासी असंख्य कष्टों से बच जाते ?

स्पेनवासियों की साजिशों और दुःखी द्वीपवासियों की आहों के बीच में कोलम्बस बीमार पड़ गया। उधर स्पेन के दरबार में भी उसके शत्रु बढ़ रहे थे। तरह तरह की शिकायतें राजा के कानों तक पहुँचाई गईं। तंग आकर राजा ने उपनिवेशों के शासन की जांच करवाने के लिये एक समिति (कमेटी) भेजी। शासन भार अपने भाई को सौंपकर ६ मार्च १४९६ को कोलम्बस स्पेन के लिये रवाना हुआ। अगर कोलम्बस कुछ और उत्तर की ओर हो लेता तो उसे पछुआ हवाओं से पूरी सहायता मिलती पर कोलम्बस को इन समुद्रों का ठीक अनुभव न था। वह पूर्व की ओर हुआ जिससे ट्रेड हवाओं और शान्त कटिबन्ध से बड़ी कठिनाई उठानी पड़ी। मार्ग में कई द्वीपों के खूँख्वार लोगों ने भी सताया।

किसी न किसी तरह ११ जून को धन और गुलामों को लदे हुये उसके जहाज केडिज की खाड़ी में जा टिके। राज-दरबार में उसका अच्छा स्वागत हुआ जिसकी उसे आशा न थी। शिकायतों का भी कोई इशारा नहीं किया गया। ८ जहाज़ों का बेड़ा कोलम्बस की अगली यात्रा के लिए तैयार कर दिया गया। सारे लाभ का दसवाँ और आठवाँ भाग कोलम्बस को मिला। उसे कुछ ज़मीन और उपाधि देने का अधिकार दिया गया। उसके दोनों बेटे राजमहल में रानी की सेवा के लिए नौकर रख लिये गये।

कोलम्बस की तीसरी यात्रा

सन् १४६८ ई० की ३० मई को कोलम्बस ने तीसरी बार नई दुनिया के लिए प्रस्थान किया। दो जहाज़ों को उसने पहले ही भेज दिया था। ६ जहाज़ों को अपने साथ लेकर वह मेडीरा द्वीप की ओर चला। यहाँ उसने लकड़ी और पानी को जहाज़ों पर भरा। यहाँ उसने तीन जहाज़ योग्य कप्तानों की देख-रेख में सीधे मार्ग से हिस्पेनिओला भेज दिये। स्वयं उसने बिलकुल नये और बिल्कुल भिन्न मार्ग का अनुसरण किया।

वह चाहता था कि इस बार कोई बड़ा और धनी देश तलाश किया जावे। वह केपवर्डी (हरित अन्तरीप—यद्यपि इसका जैसा नाम है वैसा इसमें गुण नहीं है क्योंकि यहाँ कोई हरी चीज़ नज़र नहीं आती है।) की ओर बढ़ा। ५ जुलाई को वह दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ा अन्त में भूमध्यरेखा केवल ५ अंश दक्षिण की ओर रह गई। पर उष्णकटिबन्ध के शान्त प्रदेश में गरमी से लोग भुनने लगे। हवा बिलकुल बन्द थी। लेकिन वह आग की भट्ठी के समान गरम थी। जहाज़ों के किनारे का कोलतार पिघलने लगा। नमकीन माँस सड़ गया। गेहूँ भुन गये। शराब और पानी के कुछ पीपे गरमी से फट गये। कुछ पानी बरस जाता था। पर गरमी कम न होती थी। ऐसी जलवायु में मल्लाहों के होश बिगड़ गये। उन्होंने कोलम्बस से उत्तर पश्चिम की ओर मुड़ने के लिए प्रार्थना की।

इस दिशा में चलने पर गरमी कम हुई और हवा के चलने से सबके जी में जी आया। लेकिन मीठा पानी किसी जहाज़ में एक पीपे से अधिक न बचा था। दैवयोग से ३१ जुलाई को तीन पहाड़ी चोटियाँ दिखाई दीं। इसी

से कोलम्बस ने इस द्वीप का नाम ट्रिनीडाड (तीन देव) रक्खा। वह इस द्वीप के पूर्वी किनारे पर उतरा। फिर वह इसके दक्षिणी तट के किनारे आगे बढ़ा। पहली अगस्त को उसने पहली बार (दक्षिणी अमरीका) महाद्वीप के दर्शन किये। पेरिया की खाड़ी में घुसने और उससे बाहर निकलने में जहाज़ों के डूबने का डर था। विशाल आरिनोको नदी इतना (मोठा) पानी समुद्र में गिराती है कि इसके डेल्टा के पास प्रबल धारायें पैदा हो जाती हैं। इसी लिये इन दो प्रणालियों (जलसंयोजकों) का नाम सर्पेन्टस् माउथ (सर्प मुख) और ड्रैगन्स माउथ (नाग-मुख) पड़ा है। वह कई दिन तक बिना जाने हुए दक्षिण-अमरीका के किनारे किनारे अपने जहाज़ों को खेता रहा। फिर उसे अपने पुराने उपनिवेश को चिन्ता हुई। टुबागो, ग्रेनाडा और मार्गेरीटा (मोती देनेवाला द्वीप) द्वीपों को देखता हुआ ३१ अगस्त को सैन डोमिंगो उपनिवेश में पहुँचा। इस बार यहाँ की दशा पहले से भी अधिक बिगड़ गई थी। स्पेन वाले कोलम्बस और उसके भाई को विदेशी समझते थे और उनसे जलते थे। कई बार विद्रोह हुआ।

स्पेन में ग़ुलामी को बढ़ती हुई बाढ़ को देखकर दयालु ईसाबेला (रानी) का भी रुख़ बदल गया। उसने शिकायतों का दूर करने के लिए १,५०० ईसवी के जून मास में बोवेडिला नामी गवर्नर को एक चिट्ठी के साथ भेजाः—

इस चिट्ठी के ले जाने वाला कमान्डर बोवेडिला आपको हमारी ओर से कुछ सूचना देगा। इस लिए हम चाहते हैं कि आप उसका भरोसा करें और उसकी आज्ञा का पालन करें।

२१ मई सन् १४९९ ई० मेड्रिड। हस्ताक्षर { मैं राजा। मैं, रानी।

बोवेडिला ने इस चिट्ठी से बड़ाही अनुचित लाभ उठाया। उपनिवेश में पहुँचकर पहले उसने कोलम्बस के घर पर क़ब्ज़ा कर लिया। फ़िर उसने कोलम्बस और उसके भाई को हथकड़ी बेड़ी पहनाकर स्पेन भेज दिया। जहाज़ के कप्तान ने कोलम्बस को बेड़ी उतारनी चाही। लेकिन कोलम्बस ने राजा के सामने बेड़ी पहने हुए ही जाने का आग्रह किया। उसने इन बेड़ियों को अपनी सेवाओं का सबसे बड़ा इनाम समझा। जब तक

वह जीता रहा उसने इन बेड़ियों को अपने सजे हुए कमरे में नज़र के सामने रक्खा। मरते समय भी उसने यह इच्छा प्रकट की कि ये बेड़ियाँ उसके साथ ही क़ब्र में गाड़ी जावें।

कोलम्बस की बेड़ियों का हाल सुनकर स्पेन भर में क्रोध की लहर फैल गई। १७ दिसम्बर सन् १५०० ई० को राज-दरबार में बड़े सम्मान के साथ कोलम्बस का स्वागत हुआ। महारानी तो उसकी दुःखभरी कहानी सुनकर रोने लगीं। कोलम्बस को क्षति-पूर्ति का वचन मिला और उसे सन्तुष्ट करने का प्रयत्न किया। बावेडिला के स्थान पर दूसरा गवर्नर नियुक्त हुआ। अपने दुराचार का उत्तर देने के लिए बावेडिला को स्पेन लौटने की आज्ञा मिली।

कोलम्बस की चौथी यात्रा

नये देशों का अन्वेषण करने में कोलम्बस की लगन इतनी बढ़ी हुई थी कि उसने बुढ़ापे में भी चैन नहीं लिया। वह अन्त तक अपने कैथलिक राजा और विशेषकर रानी की सेवा करना चाहता था। ६ मई

सन् १५०२ ईसवी को ४ जहाज़ और १५० मल्लाह लेकर ६६ वर्ष की उम्र में वह एशिया के लिए सीधा जल-मार्ग ढूढ़ने के लिए निकला। लेकिन उसे आज्ञा मिली थी कि वह हिस्पेनिओला के तट पर न उतरे। पर उसका सबसे बड़ा जहाज़ बिगड़ गया। बोवेडिला के स्थान पर जो नया गवर्नर आया था उसने कोलम्बस को दूसरा जहाज़ देने से साफ़ इनकार कर दिया। तब कोलम्बस ने आगे वाले तूफ़ान से बचने के लिए बन्दरगाह में ठहरने की आज्ञा मांगी। लेकिन कोलम्बस को यह आज्ञा भी न मिली क्योंकि आज्ञा लेते समय आकाश साफ़ मालूम होता था। विवश हो वह तूफ़ान से बचने के लिए पश्चिम की ओर चला गया। लेकिन चलते समय प्रार्थना कर गया कि स्पेन को भेजा जानेवाला जहाज़ी बेड़ा दो दिन अवश्य रोक लिया जावे। उसकी यह प्रार्थना भी न मानी गई। नौसिखिया कप्तान कोलम्बस की बात पर हंसने लगे और जहाज़ी बेड़ा खोलकर चलते बने। लेकिन दो दिन के भीतर एक जहाज़ को छोड़कर और सब समुद्र में डूब गये। जो जहाज़ बच गया वह सबसे अधिक कमज़ोर था और

उसी पर कोलम्बस के हिस्से का धन लदा था। दूसरे जहाज़ों पर कहीं अधिक सेना और सामान भरा था जो इण्डियन लोगों को दुःख देकर वसूल किया गया था। इन्हीं जहाज़ों पर बोबेडिला और दूसरे स्पेनवासी सवार थे जो कोलम्बस के कट्टर दुश्मन थे। इस घटना से मल्लाह लोग कोलम्बस पर बड़ी श्रद्धा रखने लगे। वे समझते थे कि कोलम्बस ने जादू करके अपने दुश्मनों को डुबा दिया और अपना माल बचा लिया। लेकिन कोलम्बस इसे ईश्वर की लीला बतलाता है जिसने पापियों को ठीक दंड दिया नहीं तो वे स्पेन में पहुंचकर साफ़ छूट जाते।

जिस प्रबल आँधी ने कोलम्बस के दुश्मनों को नष्ट कर डाला उसको कोलम्बस ने पश्चिमी तट के आड़ में डाल दिया। तूफान के बाद कोलम्बस मेक्सिको की खाड़ी के रास्ते से जमैका की ओर चला। रास्ते में उसे इधर-उधर बहुत कुछ भटकना पड़ा। एक बार उसने मास्क्विटो-तट पर डेरियन की खाड़ी के पास उपनिवेश बनाने की सोची। लेकिन फिर इण्डियन लोगों का विरोध देखकर उसने यह विचार छोड़ दिया। जमैका पहुँचने के



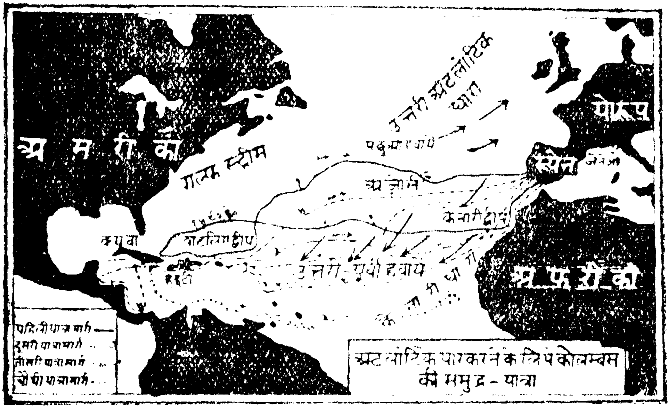
हिस्पेनिओला का परिवार

पहले एक और प्रबल तूफ़ान आया जो आठ दिन रहा। उसके जहाज़ जर्जर हो गये थे। खाना चुक गया था। उसमें इतनी फफूंदी और कीड़े हो गये थे कि दिन में उसे देखकर खाना असम्भव था। इसलिए मल्लाह लोग रात के अंधेरे में उसे खाते थे। हिस्पेनिओला खबर भेजने और वहाँ से सहायता मिलने में एक वर्ष लग गया। कोलम्बस का यह एक वर्ष जमैका में बड़ी चिन्ता और कठिनाई में बीता। उसके मल्लाह लोग बिद्रोही बन रहे थे और इंडियन लोगों को सताते थे। इण्डियन लोगों ने तङ्ग आकर स्पेन वालों को भोजन पहुँचाना बन्द कर दिया। एक बार तो भूखों मरने के सिवा और कोई चारा न दिखाई दिया। कोलम्बस को एक तरकीब सूझी। उसे दो एक दिन में होनेवाले चन्द्रग्रहण का ध्यान आया। उसने इण्डियन लोगों को बुलाकर कहा कि तुम्हारे रसद बन्द कर देने से ईश्वर नाराज़ हो गया है आज ही तुम चन्द्रमा को लाल लाल और अंधेरा देखोगे। जब चन्द्रग्रहण के समय कोलम्बस की बात सच निकली तब तो भोले-भाले इण्डियन लोगों के डर का ठिकाना न रहा। वे खाना लेकर कोलम्बस के

पास पहुँचे। उससे क्षमा माँगने लगे और चन्द्रमा की सूरत को ठीक करने के लिए कोलम्बस से प्रार्थना की। थोड़ी देर में ग्रहण साफ़ हो गया। इस प्रकार कोलम्बस को फिर कभी वहाँ भोजन मिलने में बाधा न पड़ी। १३ अगस्त सन् १५०४ को हिस्पेनिओला में मदद आ गई। इसके कुछ ही समय बाद कोलम्बस स्पेन को लौट गया। १५०५ में महारानी इसाबेला का देहान्त हो गया। फिर तो कोलम्बस की क़द्र करने वाला स्पेन में कोई न रहा। उसकी चिन्ता दिन दिन बढ़ने लगी। बीमारी ने भी आ घेरा। २० मई सन् १५०६ ई० को वह महापुरुष भी इस संसार से चल बसा।

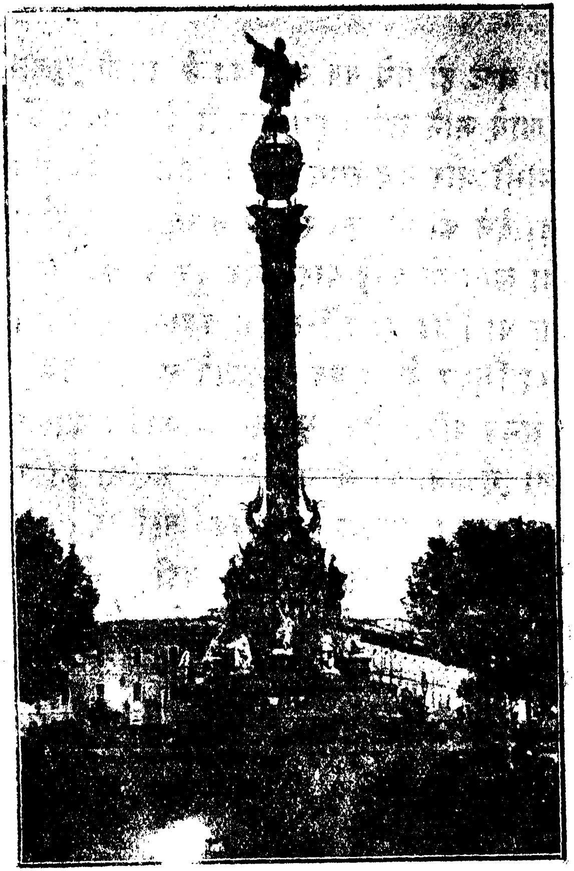
कोलम्बस का धैर्य आदर्श है। ईश्वर में उसका अटल विश्वास था। उसके समय के लोगों को तट से दूर जाने में डर लगता था। कोलम्बस ने सीधे समुद्र को पार करके आगे के अन्वेषणों के लिए रास्ता खोल दिया। वह सचमुच भूगोलविद्या का स्तम्भ था। उन्नति के विचार से उसके प्रयत्न ने योरुप को दूसरे महाद्वीपों से कई सदी आगे उछाल दिया। स्पेन को तो उसने कुछ समय के लिए सब देशों का नेता बना दिया।

पश्चिमी इंडीज़ द्वीप-समूह स्पेन के लिए काम-धेनु के समान थे। यदि स्पेनवालों में लोभ और झूठे धर्म का कट्टरपन न होता तो आज भी स्पेन सब का सरताज



होता। लेकिन उन्हें यही पागलपन सवार था कि चाहे छल से चाहे बल से वे दूसरी जातियों को ईसाई अवश्य बना डालें। उनकी समझ में नाम-मात्र का ईसाई (चाहे वह कितना ही दुराचारी और ढोंगी क्यों न हो) स्वर्ग का अधिकारी था। दूसरे धर्म का मनुष्य कितना ही ईश्वर-भक्त और सदाचारी होने पर भी घोर नरक का अधिकारी था। फिर भला स्वर्ग का ठेकेदार बन या

स्त्री का लोभ देकर अथवा तलवार के ज़ोर से निर्बल जातियों को ईसाई बनाने से क्यों बाज़ आते। इनके मत में दूसरे धर्म और जाति के मनुष्य जानवरों से भी गये बीते थे। अगर वे ईसाई न बनें तो उनको मारने या ग़ुलाम बनाने में स्पेन के पुजारी कोई पाप नहीं समझते थे। इस झूठे धर्म की आड़ में लोभ की भी सीमा न थी। यदि स्पेनवाले परिश्रम और धीरज से काम करते तो वे पश्चिमी द्वीपसमूह में गन्ना आदि सभी तरह की फ़सलें उगा सकते थे। समुद्र-तल के स्थानों की जलवायु उष्णार्द्र (गरम और तर) थी। ऊँचे पहाड़ी स्थान समशीतोष्ण थे। एक इन्डियन सरदार ने स्पेन-वालों से प्रार्थना भी की कि उसे बहुत सा अनाज लगान के रूप में दिया करेगा। लेकिन उन्हें तो सोना-चाँदी चाहिए था और सो भी एकदम बिना परिश्रम उठाये ही। जब इण्डियन लोग अपना सब सोना-चांदी स्पेनवालों को दे चुके तो उनसे खानों में काम करने की बेगार ली गई। जब वे इस गुलामी में समूल नष्ट हो गये तो उनकी जगह छोटे छोटे द्वीपों से कैरिब लोग पकड़ कर लाये गये और उनसे काम लिया गया। जब



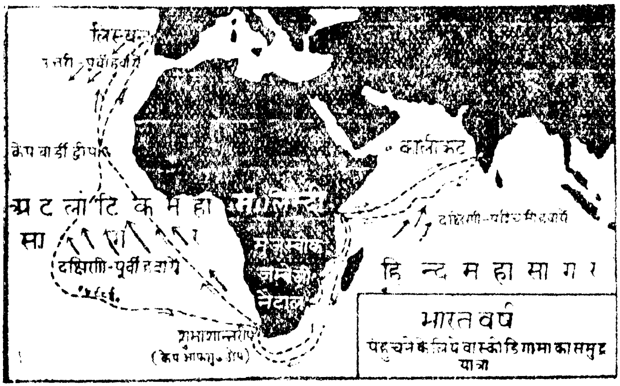
बार्स॰ लम्वस का स्मारक स्तम्भ ।

वे भी नष्ट हो गये तब अफ्रीका के हबशी ग़ुलाम बना-कर लाये जाने लगे। इस ग़ुलामी के व्यापार में अंगरेज़ फ्रांसीसी और डच लोग ख़ुशी शामिल हो गये। उन्हें कपड़ा देने की तो ज़रूरत ही न थी। जब ग़ुलामों को जाड़ा लगा तो कोड़े मार मार कर उनको गरम किया जाता था। वह हृदय विदारक कहानी लम्बी है। यहाँ इसका ज़िक्र केवल यह बतलाने के लिये किया है कि इस समय पश्चिमी द्वीप- मूह की अधिकांश आबादी इन्हीं हबशी ग़ुलामों की सन्तान हैं इन कलंकों का जन्मदाता भी कोलम्बस ही था। इसलिए जहाँ हम उसके गुणों की मुक्तकंठ से प्रशंसा करते हैं वहीं काली जातियों पर आफ़त लाने को घोर अपराध से भी वह मुक्त नहीं किया जा सकता। ईश्वर हमें बल दे कि उसके दोषों को सुधार लें और उसके अनेक गुणों से लाभ उठावें।

अन्वेषक-दर्शन

वास्को डिगामा

योरुप के दक्षिणी-पश्चिमी कोने पर पुर्तगाल एक बहुत ही छोटा देश है। पहिले यहाँ रोमन लोगों का राज्य रहा। फिर मध्यकाल में मूर लोगों ने यहाँ अपना अधिकार जमाया। मूर लोगों से मुक्त होने में पुर्तगाल को सैकड़ों वर्ष लग गये। अन्त में पुर्तगाल ने उनसे



भारतवर्ष
पहुचने के लिए वास्को डिगामा का समुद्र यात्रा

बदला लेने के लिए उन्हीं के देश (अफ्रीका) पर चढ़ाई करने की सोची। इसके लिए नावों के बेड़े की ज़रूरत पड़ी। बदला लेने में पुर्तगाल वाले सफल न हुये, पर उन्हें नाव चलाने का काफ़ी ज्ञान हो गया। वे अफ्रीका

के तट के पास पास चलकर दूर दूर का सफ़र करने लगे। जब कोलम्बस की यात्रा से स्पेन को उन्होंने एक दम धनी होते देखा तब तो वे हिन्दुस्तान पहुंचने के लिए और भी लालायित होने लगे।

अब तक हिन्दुस्तान के मसाले और दूसरे मूल्यवान पदार्थ हिन्दुस्तानी जहाज़ों में लदकर आते थे और अरब के दक्षिण में अदल् बन्दरगाह में उतार दिये जाते थे। अदल् (जो उस समय का बड़ा शहर था।) के सौदागर फिर कुछ सामान को अपने जहाज़ों में भरकर और कुछ को ऊंटों पर लादकर जद्दा में पहुँचाते थे। वहाँ से लाल सागर के किनारे-किनारे स्पेन तक यह सामान पहुँचाया जाता था। स्वेज़ से फिर वह गाड़ियों और ऊँटों पर लदकर नील नदी तक पहुँचता था। नील की नावें उसे सिकन्दरिया ले जाती थीं। सिकन्दरिया में वेनिस की नावें इस सामान की पहिले ही से राह देखती रहती थीं और उसे लादकर योरुप भेजती थीं।

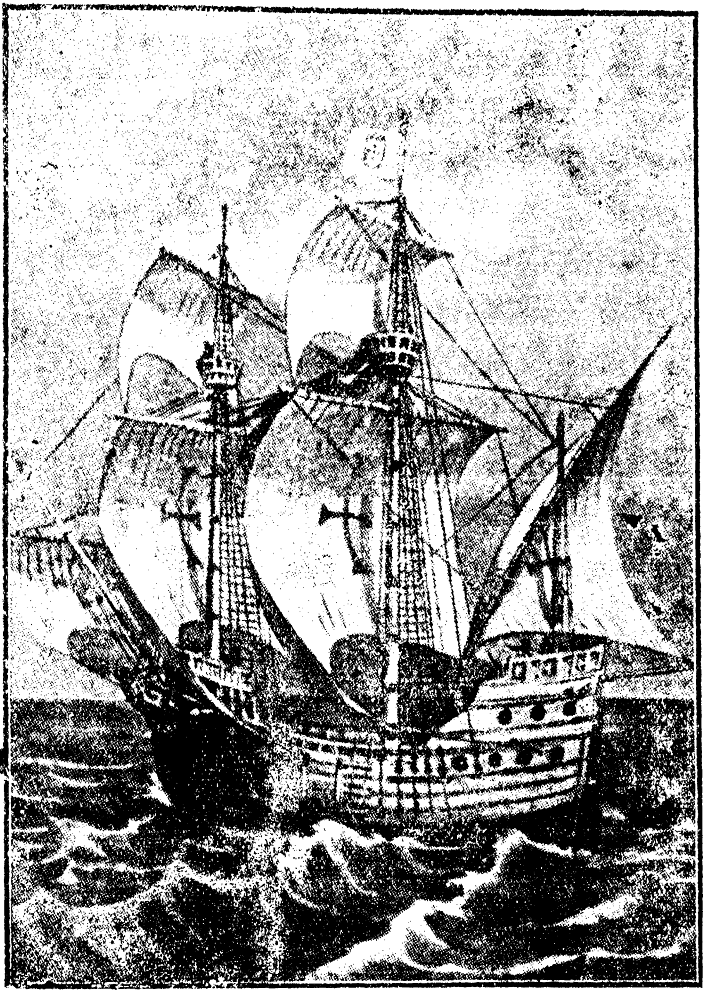
पर यह मार्ग पुर्तगाल के लिए खुला हुआ न था। उन्हें इस मार्ग में मुसलिम जातियों का डर था। इस लिए केप-आफ़-गुडहोप के मार्ग से ४ जहाज़ राजा की ओर

से भेजने का निश्चय हुआ। सन् १४९७ ई० के जुलाई महीने में चार जहाज़ वास्को डिगामा की अध्यक्षता में हिन्दुस्तान की ओर भेजे गये।

आरम्भ में ही कुहरे के कारण जहाज़ भटक गये और एक दूसरे से अलग हो गये। पर अफ्रीका के उत्तर पश्चिम में केपवर्डी द्वीप के सामने वे फिर मिल गये। यहीं बादबानों की भी मरम्मत की गई और ताज़ा पानी भोजन और ईंधन भी जहाज़ पर लाद लिया। सब तयारी करके अगस्त के आरम्भ में जहाज़ फिर चल दिये। इसके आगे वास्को डिगामा ने तटीय मार्ग छोड़ कर स्थल से दूर समुद्र में जहाज़ चलाये। पहिले जहाज़ दक्षिण की ओर बढ़े फिर कई महीने बाद वे पूर्व की ओर हो लिये। अन्त में नवम्बर के आरम्भ में अफ्रीका का तट फिर दिखाई देने लगा। अब वे केप आफ़ गुड-होप (सदाशान्तरीप) से दूर न थे। इसके कुछ ही दिन बाद डिगामा ने एक खाड़ी में आँधी से बचने के लिए शरण ली। यहाँ वह एक सप्ताह तक ठहरा। मल्लाहों ने जहाज़ों की सफ़ाई की और मस्तूलों की मरम्मत की। जब वे तट के पास आये तो उन्होंने एक

मूलनिवासी को शहद तोड़ते देखा। झाड़ियों की आड़ में चुपके चुपके बढ़कर मल्लाह अचानक उस मूलनिवासी के पास जा पहुंचे और उसको पकड़ लिया। वह मल्लाहों की बोली या इसारे बिलकुल नहीं समझता था। वास्को डिगामा उसे जहाज़ पर ले आया और उसे पेट भर भोजन कराया। फिर उसे सुन्दर कपड़े पहनाकर दूसरे दिन छोड़ दिया।

इस प्रकार निर्जन तट पर बहुत से हाटनटाट लोग भी आने लगे। हाटनटाट लोगों का क़द छोटा था। उनका रंग भूरा था और वे खाल के कपड़े पहनते थे। जब वे घर लौटे तो वास्को डिगामा का आदमी भी उनके साथ हो लिया। रास्ते में तट पर उन्होंने एक सील मछली पकड़ी और उसे पकाकर उन्होंने अपने अतिथि को भी खिलाया। यह अतिथि या तो अधिक खा गया अथवा उसे ऐसा भोजन करने का अभ्यास न था। उसका जी मचलाया और फिर वह एकदम भागकर जहाज़ की ओर आया। वास्को डिगामा ने अपने साथी को आवाज़ दी और उसे लाने के लिए नाव ले गया। लेकिन नाव पर चढ़ते समय दोनों दलों



इसी प्रकार के जहाज़ों में वास्को डिगामा ने हिन्दुस्तान की यात्रा की थी

में मुठभेड़ हो गई। वास्को डिगामा और उसके तीन चार साथियों के भालों की चोट आई। वे सब मल्लाह अपनी नाव को जहाज़ के पास भगा लाये। फिर वे उनसे बदला लेकर चलते बने।

आरम्भ में हवा सामने की थी। इसलिए जहाज़ अन्तरीप का चक्कर न काट सके पर कुछ दिनों में हवा बदली और वे लोग बढ़ने लगे। तट के मूलनिवासियों को भी छोटी छोटी चीज़ें देकर उनसे भेड़ या बैल ले लेते थे और उन्हें अपना मित्र भी बनाते जाते थे। बड़े दिन तक अफ्रीक़ा के दक्षिणी तट की यात्रा पूरी हो हो गई। अब वे पूर्वी तट के पास पास चलकर उत्तर की ओर बढ़ने लगे। बड़े दिन को वह जिस देश के किनारे से होकर जा रहा था उसका नाम यीशु के जन्म दिन के उपलक्ष में उसने नैटाल रक्खा। नैटाल शब्द का अर्थ "जन्म" है। यह नाम अब तक चला आता है। इस तट के लोग लम्बे और काले थे। वे नंगे रहते थे और बाँहों और पैरों में ताँबे के कड़े पहनते थे।

अधिक आगे बढ़ने पर और भी भिन्न लोग मिले। ये लोग ज्वार बाजरा उगाते थे और मुर्ग़ी गाय बैल

आदि जानवर भी पालते थे। उनके घर मिट्टी और घास पात के ही बने होते थे। ये लोग तरह तरह के कपड़े (कालीकट के बने हुए) पहनते थे। इनकी भाषा अरबी से मिलती जुलती थी। इन्होंने अपने देश का नाम मुज़म्बीक बतलाया। मुज़म्बीक के शेख ने उन लोगों को मूर समझ कर उनका बड़ा आदर किया। पर उसने ईसाइयों के चिह्न पहचान लिये। इस लिए गामा दो एक अरबी मल्लाहों को पकड़ कर चलता बना। आगे मलिन्द शहर मिला, यहाँ गुजराती सौदागर बहुत थे। यहाँ वास्को डिगामा को पूरी पूरी सहायता मिली। गुजराती मल्लाह हिन्द महासागर के मार्ग से भली भाँति परिचित थे। एक गुजराती मल्लाह वास्को डिगामा के जहाज़ों को कालीकट ले आया। योरोपियन लोगों के लिए एक-दम समुद्र के बीच में ३ हज़ार मील की यात्रा करने का यह पहला ही अवसर था। अगर इस यात्रा में डिगामा को एक विश्वासपात्र हिन्दुस्तानी मल्लाह की सहायता न मिलती तो हिन्दुस्तान का इतिहास ही दूसरा होता।

२३ दिन तक स्थल के दर्शन न हुए। १७ मई

को हिन्दुस्तान का तट दिखाई देने लगा। जब गुजराती मल्लाह ने कालीकट की पहाड़ियों की ओर इशारा किया तब तो वास्को डिगामा ख़ुशी से उछल पड़ा। उसने सब मल्लाहों की बढ़िया दावत की। अन्त में कालीकट से प्रायः दो मील नीचे की ओर जहाज़ों ने लंगर डाल दिया। डिगामा ने एक ऐसे आदमी को तट पर पूछताछ करने के लिए भेजा जिसे मरने की सज़ा दी जा चुकी थी। किनारे पर इस अजनबी आदमी का विचित्र वेष देखकर दर्शकों की भीड़ लग गई। लोगों ने उससे तरह तरह के प्रश्न किये। उसकी बोली न समझने पर वे उसे उस घर में ले गये जहाँ दो मूर रहते थे। इनमें से एक मूर मरोक्को होता हुआ ट्यूनिस से यहाँ आया था और स्पेनिश भाषा बोल सकता था। जब वह डिगामा के जहाज़ पर गया और स्पेनिश भाषा में बातचीत की तो डिगामा की आँखों से ख़ुशी के आँसू बहने लगे। डिगामा ने उसे छाती से लगाया और उसका बड़ा आदर किया। इस मूर ने बदले में डिगामा को कालीकट के राजा ज़मोरिन से भेंट करवाने आदि में बड़ी भारी सहायता की। ज़मोरिन के पास फिर

समाचार भेजा गया। ज़मोरिन ने जहाज़ों को कालीकट के पास पदरानी बन्दरगाह में ठहरने की आज्ञा दी और वह वास्को डिगामा से भेंट करने को भी राज़ी हो गया। वास्को डिगामा १३ चुने हुए साथियों के साथ राजमहल की ओर चला। रास्ते में अपार भीड़ थी। राजकर्मचारियों को रास्ता निकालने में बड़ी कठिनाई पड़ी। आगे मन्दिर पड़ा, जहां कोतवाल और उसके सिपाहियों ने साष्टांग वन्दना की। वास्को डिगामा और उसके मल्लाहों ने भी मन्दिर की मूर्तियों के सामने माथा टेका। फिर सुन्दर उद्यान, विशाल भवन और दरबारी लोग मिले। आगे बढ़ने पर राजभवन के सामने ब्राह्मण ड्योढ़ीवान (वृद्ध कंचुकी) ने वास्को डिगामा को छाती से लगाया। फिर वह सब लोगों को ज़मोरिन के सामने ले गया।

ज़मोरिन हरी मखमल की शय्यावाले सिंहासन पर लेटा हुआ था। शय्या के ऊपर स्वर्णछत्र था। डिगामा के भीतर प्रवेश करने के समय ज़मोरिन अपने हाथों में ठोस सोने का विशाल पीकदान पकड़े हुए था। उसके दाहिने ओर सोने का ही इतना बड़ा पात्र था कि एक

लम्बा आदमी मुश्किल से उसे अपनी कौरी में भर सकता था। इस पात्र में लगे हुए पान रक्खे थे। पान-दान के पास ही महाराज का प्रधान ब्राह्मण खड़ा हुआ था। ज्योंही महाराज एक पान थूक देते त्यों ही वह उन्हें दूसरा ताज़ा पान पकड़ा देता। जब कोई सिंहा-सनशायी महाराज से बात करता तो सब लोग सम्मान सूचित करने के लिए हाथों को मुँह पर रख लेते।

आगन्तुक पुर्त्तगालियों ने सम्राट् को दण्डवत् करना पहले ही सीख लिया था। उन्होंने अपने हाथों को सिर के आगे बढ़ा कर महाराज को तीन बार दंडवत् प्रणाम किया फिर निःशब्द सेवक प्यासे अतिथियों के लिए पानी ले आये। अतिथियों को बिना मुंह लगाये हुए ही बरतनों से पानी पीने को कहा गया। पर इन्हें इस प्रकार पानी पीने का अभ्यास न था। इसलिए एक दो का गला घुट गया और शेष के कपड़े भीग गये।

फिर नौकर केला और खरबूज़े ले आये पर सब की आँख ज़मोरिन की ओर लगी रही। ज़मोरिन लम्बे क़द और सांवले रंग का था। वह बारीक कती हुई सुन्दर सफ़ेद धोती पहने हुए था। इसके सिरों पर सोने

की अंगूठियों और बड़े-बड़े लालों (मणियों) की माला पुरी हुई थी। एक बांह में कोहनी से ऊपर वह रत्नजटित तीन सोने के आभूषण पहने था। बीच की अंगूठी में अंगूठे के बराबर हीरा जड़ा हुआ था। उसके गले में सुपारी के बराबर बड़े-बड़े मोतियों की माला थी यह दो लड़ी की माला गोदी तक लटक रही थी। इसके ऊपर एक और छोटी माला थी। (इस माला की जंजीर चमकते हुए सोने की बनी थी, जिसमें मोती और माणिक्य पुरे हुए थे। इसकी घुंडी में एक बहुत बड़ा पन्ना लगा हुआ था। वह बालों और कानों में भी तरह तरह के रत्न पहने हुए था। ज़मोरिन के नौकर भी स्वच्छ रेशमी कपड़े पहने हुए थे और उनकी ढाल पर तरह तरह के मणि-माणिक्य का जड़ाव था।

राजमहल की सम्पत्ति देखकर डिगामा की आँखें चकाचौंध हो गईं। उसे कोलम्बस से ईर्ष्या हो रही थी, जिसने शीशे की गोलियों और सस्ते खिलौनों से नई दुनिया में काम चला लिया था। उसके मन में उस समृद्ध व्यापार को छीनने के विचार उठ रहे थे जो इस समय कालीकट में फ़ारिस, अरब और अफ्रीका के साथ

हो रहा था। जमोरिन ने डिगामा से दो टूक बात की और पूछा कि क्या चाहता है? अरबो सौदागरों के डर के मारे उसने एकान्त में अपना अभिप्राय बतलाने की प्रार्थना की। ज़मोरिन एक दूसरे शानदार कमरे में पहुँच कर एक सुसज्जित सिंहासन पर लेट गया। डिगामा ने एक चिट्ठी निकाली और अपनी आँखों और माथे से स्पर्श करके और स्वयं घुटनों के बल झुककर ज़मोरिन को समर्पित की। कुछ लोगों का अनुमान है कि यह चिट्ठी बनावटी थी और कालीकट में लंगर डालने के बाद उसने पुर्चगाल के राजा के झूठे दस्तखत बना लिये। कारण यह था कि उसने ज़मोरिन को जो भेंट चढ़ाई वह इतनी छोटी थी कि पहले कोतवाल ने कहा कि ऐसी भेंट चढ़ाने में छोटे से छोटे सौदागर को भी शरम लगती है फिर तुम्हारे बादशाह क्या एक साधारण सौदागर से भी तुच्छ हैं जिन्हें ऐसी भेंट भेजने का साहस हुआ। उसकी भेंट में बारह धारीदार थान, चार लाल साफे, छः टोपियाँ, चार मूंगों की मालायें, बरतनों का एक सन्दूक़, एक शक्कर का डिब्बा, दो तेल के पीपे और दो शहद के पीपे थे। इससे और बढ़िया

सामान डिगामा के पास था ही नहीं। इसलिए उसने एक झूठी कहानी गढ़ ली कि राजा की ओर से भेजी हुई भेंटें एक दूसरे जहाज़ पर लदी थीं और वह जहाज़ तूफ़ान में डूब गया!

कुछ भी हो, ज़मोरिन पर अच्छा असर पड़ा। उसने कहा—क्या पुर्चगाल के लोग यहाँ पत्थरों अथवा मनुष्यों से मिलने की आशा करते थे? तुमसे अच्छे तो मक्का के सौदागर होते हैं। तुम्हारा राजा बहुत ही तुच्छ अथवा असभ्य होगा। डिगामा को बहाना बनाने और गिड़गिड़ाने के सिवा और चारा ही क्या था। अन्त में राजा को तरस आया और उसने डिगामा को कालीकट में अपना सामान बेचने की आज्ञा दे दी, पर कालीकट के लोग उसका सामान लेने को राजी न हुए। डिगामा ने अदरख़ आदि मसाले मोल लेकर ज़मोरिन के पास ख़बर भेजी कि हम लोग पुर्चगाल लौटे जा रहे हैं। पर राजा ने दूत से कहा कि जब तक डिगामा राज-कर न देगा तब तक तुम्हारा छुटकारा नहीं हो सकता है। डिगामा ने एक नाव पकड़ ली जिस पर कुछ राज-दरबारी और १३ हिन्दुस्तानी सवार थे। डिगामा ने

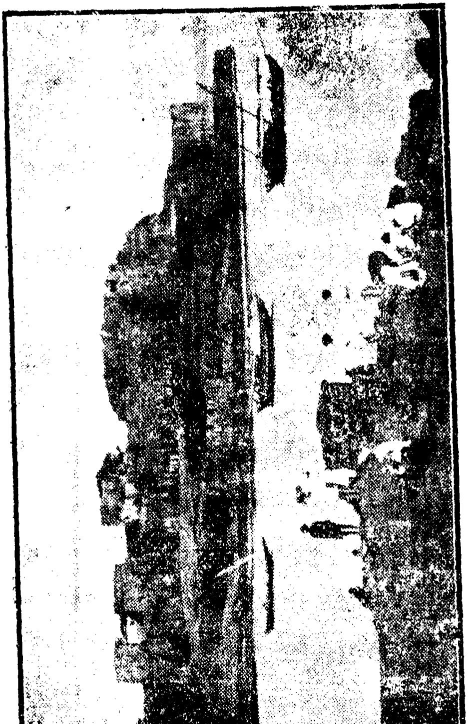
कहला भेजा, यदि हमारा आदमी न छूटेगा तो हम इन सब लोगों को लेकर पुर्चगाल लौट जायंगे। प्रजावत्सल



गोआ के एक भाग का चित्र

जमोरिन ने विवश होकर पुर्चगाली को छोड़ दिया और

उसे एक चिट्ठी भी दे दी। इस चिट्ठी में पुर्चगाल के राजा के लिये लिखा था कि "आपके घराने का एक



समुद्र की ओर से गोआ के क़िले का दृश्य ।

सज्जन (वास्को डिगामा) मेरे देश में आया। उससे मिल कर मुझे प्रसन्नता हुई। मेरा देश दारचीनी, लौंग,

अदरख, कालीमिर्च और बहुमूल्य पत्थरों में बहुत ही स्मृद्धि है। इसके बदले में हमारे सौदागर सोना, चाँदी, मूँगा, और लाल थान ले सकते हैं।"

ऐसा उदार पत्र और अपने आदमी को भी पाजाने पर वास्को डिगामा ने दरबारियों को छोड़ा और शेष हिन्दुस्तानियों को साथ लेकर चलता बना। हिन्दुस्तानियों ने अपने लोगों को छुड़ाने के लिये ७० नावें भेजीं लेकिन दुर्भाग्य से एक तूफान आ गया और इसी बीच में डिगामा दूर निकल गया। इस समय अगस्त का अंत था। उसको घर छोड़े हुये एक वर्ष से ऊपर बीत चुका था। पुर्चगाल पहुँचने में भी उसे एक वर्ष लग गया। लेकिन जब वह पुर्चगाल में पहुंचा तो पुर्चगाल में बड़ी खुशी मनाई गई। डिगामा का अच्छा स्वागत हुआ। राजा ने इस अवसर के उपलक्ष में साँड़ों की लड़ाई करवाई और कुत्तों की दावत की। पर इस खबर से वेनिस में उदासी छागई। इसके बाद पुर्चगाल के जहाज़ प्राय: प्रति वर्ष हिन्दुस्तान और पूर्व के देशों में लगातार आने लगे। कुछ ही समय में अफ्रीका और एशिया के अधिकांश प्रदेश पर पुर्चगाल का अधिकार होगया।

यदि पुर्तगाल के व्यापारी लोगों में अन्धविश्वास, निर्दयता और लोभ की अधिक मात्रा न बढ़ गई होती तो अब भी संसार का अधिकांश व्यापार उन्हीं के हाथ में होता। डिगामा की दूसरी यात्रा इन्हीं दोषों का पूरा नमूना है। उसमें भौगोलिक खोज की बहुत ही कम गंध है। इसलिये वह इतिहासप्रेमियों के लिये छोड़ दी गई है।

सर फ्रेंसिस ड्रेक

कोलम्बस की खोज और उत्साही स्पेन वालों के साहस से स्पेन ने नई दुनिया में एक विशाल साम्राज्य बना लिया था। अमरीका के जीते हुये देशों से स्पेन को अपार सोना-चाँदी मिला। इससे स्पेन के राजा योरुप भर में सबसे अधिक धनी हो गये। फिर भी चाँदी और सोने से लदे हुये जहाज़ स्पेन को लगातार आते रहे। स्पेन के राजा ने आज्ञा निकाली कि स्पेन के साम्राज्य में केवल स्पेनवाले ही व्यापार करें। महारानी एलिज़बेथ के समय में इंगलैंड (विशेषकर डेवन) के

मल्लाह स्पेन की लूट में अपना भाग बंटाने के लिये उत्सुक हो रहे थे। स्पेन के राजा की आज्ञा न होने पर भी कुछ अंग्रेज़ों ने स्पेन के उपनिवेशों में छिपे छिपे व्यापार करना आरम्भ कर दिया। इस समय सब से अधिक लाभ अफ्रीका में मनुष्यों को गुलाम बनाने और उनको नई दुनिया में बेंचने से होता था। गुलामों का व्यापार डेवन के हाकिन्स नामी अंग्रेज़ ने आरम्भ किया था। लेकिन चाँदीसोने से लदे हुये स्पेन के जहाज़ों को लूटने में सर्व प्रधान फ्रेंसिस ड्रेक था।

सर फ्रेंसिस ड्रेक का जन्म १५४५ ई० में डेवनशायर के एक गांव में हुआ था। उसका बाप गरीब था। इस लिये उसके रिश्तेदार हाकिन्स ने फ्रेंसिस को शिक्षा दिलवाई। ड्रेक ने पन्द्रह वर्ष की उम्र में पहली बार समुद्र देखा। इसके बाद उसका प्रायः समस्त जीवन समुद्र के ही ऊपर बीता।

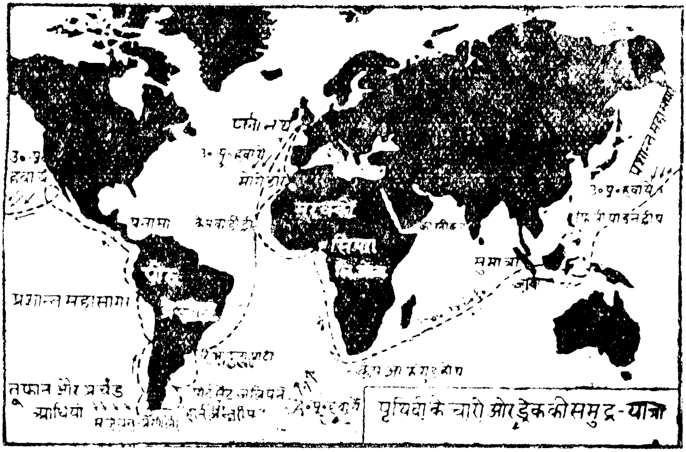
एक तटीय जहाज़ पर काम सीखने के बाद बीस वर्ष की अवस्था में हाकिन्स के साथ ड्रेक पश्चिमी द्वीप समूह को गया। यह यात्रा गुलामों के व्यापार के सम्बन्ध में थी। दो वर्ष बाद वह स्वयं एक जहाज़ का

कप्तान बनकर इधर आया। लेकिन मेक्सिको के वेरा-क्रूज बन्दरगाह के पास उसके दो साथी जहाज़ों को छोड़कर शेष सब नष्ट हो गये। उसकी बहुत सी सम्पत्ति नष्ट हो गई। इससे वह स्पेन का कट्टर दुश्मन हो गया।

घर लौटने पर उसने महारानी एलिज़बेथ से आज्ञा-पत्र प्राप्त कर लिया और स्पेन के जहाज़ों को लूटने के लिये उसने तीन बार पश्चिमी द्वीप समूह की यात्रा की। एक बार वह पनामा स्थलसंयोजक में उतरा। वहां ऊंचे पेड़ पर चढ़कर उसने एक विचित्र दृश्य देखा जिससे उसके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। पेड़ के ऊपर से उसने दूसरी ओर भी समुद्र (प्रशान्त महासागर) देखा और उस ओर जहाज़ ले जाने का निश्चय कर लिया। ड्रेक के जीवन में यह सब से बड़ी जल-यात्रा थी। इसने ड्रेक के नाम को अमर और इंगलैंड को समुद्र की रानी बना दिया।

१५७७ के नवम्बर मास में प्लीमथ बन्दरगाह से ड्रेक ने यह विश्वविख्यात समुद्र यात्रा आरम्भ की। ड्रेक के साथ १६६ मनुष्य और पांच जहाज़ थे। ड्रेक

स्वयं पेलिकन (गोल्डेन हाइंड) जहाज़ पर सवार था। यह जहाज़ १०० टन का था। आजकल के ३५००० टन वाले जहाज़ों के सामने ड्रेक का जहाज़ सचमुच एक



पृथिवी के चारों ओर ड्रेक की समुद्र-यात्रा

खिलौना था। इस पर १८ छोटी तोपें लगीं थीं। इनका निशाना बड़ा सच्चा था और गोला भी काफी दूर तक जाता था। एक जहाज़ ८० टन का था। एक पचास टन वाले जहाज़ पर खाने पीने और दूसरी तरह का सभी सामान लदा था। यह गोदाम (सामान) का ही जहाज़ था। एक जहाज़ पन्द्रह टन का था। सभी जहाज़ हथियारों से सुसज्जित थे। ड्रेक के साथियों में १५०

मनुष्य युद्धकला में निपुण थे। केवल १५ मनुष्य उच्च-घराने के थे जो अनुभव प्राप्त करने के लिये ड्रेक के जहाज़ पर आये थे। इन्हीं में एक मनुष्य सन्देहयुक्त था। कहा जाता है कि इस समय इंगलैंड के बड़े बड़े लोग स्पेन से बिगाड़ करना नहीं चाहते थे। उन्हें डर था कि ड्रेक की लूट मार से स्पेन रुष्ट हो जायगा। इस लिये ड्रेक की मंडली में विद्रोह फैलाने के लिये वह साथ कर दिया गया था। अन्त में इस सन्दिग्ध मनुष्य को विद्रोह फैलाने के अपराध में प्राण दण्ड दिया गया।

यात्रा आरम्भ करते ही इतना भीषण तूफान आया कि जहाजों की मरम्मत के लिये फिर तट पर लौटना पड़ा। १ महीना मरम्मत में लगा। दिसम्बर मास में फिर प्रस्थान किया गया। बड़े दिन को मरक्को का तट दिखाई दिया। मोगाडोर बन्दरगाह में जहाज़ एक महीने ठहरे रहे। यहाँ उन्होंने स्पेन की मछली पकड़ने वाली कुछ नावों को देखा और एक पुर्चगाली नाव को पकड़ लिया जो केपवर्डी द्वीप से नमक लाने जा रही थी। स्पेन के राजा की ओर से इस तट के लोगों को बाहरी लोगों से व्यापार करने की आज्ञा न थी। फिर भी

ड्रेक के साथियों ने मूलनिवासियों से कपड़े और जूतों के बदले में भेड़, मुर्गी और दूसरी आवश्यक चीजें ले लीं। वहाँ द्वीप के लोग अंग्रेज़ों को देखकर अपना घर छोड़ कर भागने लगे। यहां ड्रेक के साथियों ने अंगूर नारियल और दूसरे फल खूब खाये। अटलांटिक महा-सागर में जैसे जैसे जहाज दक्षिण की ओर बढ़ने लगे वैसे वैसे गरमी भी अधिक पड़ने लगी। एक स्थान (विषवतरेखा) पर मध्यान्ह का सूर्य ठीक सिर ऊपर था। दूसरे दिन दक्षिणी गोलार्द्ध में जहाजों के पहुंचने के कारण सूर्य दोपहर के समय उत्तर की ओर सिर के ऊपर था। इसके बाद जहाजों को एकदम अटलांटिक महासागर के बीच में होकर चलना पड़ा। ५४ दिन तक कोई स्थल दिखाई नहीं दिया। अन्त में ब्रेज़िल का तट दिखाई देने लगा। यहां दक्षिणी पूर्वी (ट्रेड) हवायें जहाज़ों के मार्ग से उल्टी ओर को चल रही थीं। इस-लिये जहाज़ों को धीरे धीरे चलना पड़ा। इस ओर अक्सर कुहरे और तूफान का सामना करना पड़ता। प्लेट नदी के मुहाने पर जहाजों को बड़ा आराम मिला। यहीं उन्हें मीठा पानी भी मिला।

अन्वेषक-दर्शन

अधिक दक्षिण की ओर चलने पर सरदी बढ़ने लगी। हवा भी बहुत तेज़ चलती थी। २० जून को जहाज़ पोर्ट सेण्ट जूलियन में पहुंचे। यहां पेटेगानिया के सुनसान तट में जहाज दो महीने ठहरे। इधर के लोग बड़े हट्टे कट्टे और फुर्तीले थे। इनसे कुछ चीज़ों का लेन देन हुआ। लेकिन वे अँग्रेज़ों के हाथ से कोई चीज़ नहीं लेते थे। अँग्रेज़ अपनी चीज़ें स्थल पर फेंक देते थे। ये लोग कमर के पास बाल लगी हुई खाल से शरीर ढक लेते थे और शेष भाग नङ्गे रहते थे। ठंडे भागों में ये लोग किस प्रकार नङ्गे रहते थे यह देख कर ड्रेक के साथियों को बड़ा आश्चर्य होता था। ये लोग धनुष बाण रखते थे और चाल ढाल से योद्धा मालूम होते थे। पहले कुछ समय तक ये लोग अँग्रेज़ों से दूर दूर रहे। एक दिन ड्रेक किनारे पर गया। तब ये लोग भी इसके पास आकर नाचने कूदने लगे। लेकिन जब ड्रेक ने पीठ फेरी तो इनके एक साथी ने सोने से जड़ी हुई ड्रेक की टोपी उतार ली और पहले अपने ऊपर लगाई फिर अपने दूसरे साथियों के सिर पर बारी बारी से रक्खी इन लोगों का चेहरा रंगा हुआ था।

देश दर्शन

तीन जहाज मेजीलन प्रणाली का पता लगाने के लिये भेजे गये। प्रणाली के दोनों ओर स्थल बहुत विशाल और पहाड़ी था। पहाड़ियाँ बरफ से ढकी थीं। एक द्वीप पर पींग्विन चिड़ियों का समूह था। ये उड़ नहीं सकती थीं। इसलिये एक ही दिन में ३००० चिड़ियां मार ली गईं।

प्रणाली को पार करने में १६ दिन लगे। यहां जाड़ा था। बरफ लगातार गिरती रही। चट्टानों के बीच में यह यात्रा बड़ी भयानक थी। मेजीलन प्रणाली को पार करने पर जहाज प्रशान्त महासागर में पहुँचे। उत्तर की ओर बढ़ने पर यहां भारी तूफान आया। तूफान में एक जहाज मांझियों के साथ समुद्र में डूब गया। दूसरे जहाज को आंधी ने प्रणाली की ओर ढकेल दिया। वह इँगलैंड लौट गया। शेष जहाज ५२ दिन तक उत्तर की ओर प्रबल आंधी में चलते रहे। इधर कुछ द्वीपों में नावें लिये हुये नङ्गे मनुष्य मिले। यहीं मीठा पानी भी मिला। तूफान के शान्त होने पर ड्रेक और उसके साथी दक्षिणी अमरीका के पश्चिमी किनारे के पास फिर उत्तर की ओर बढ़े। इधर स्पेन वालों का भी डर

था। इसलिये सब लोग बन्दूकों को भर कर तयार रखते थे।

एक स्थान पर स्पेन वालों का एक जहाज लूट लिया गया। कोक्रिम्बो स्थान के पास जब ड्रेक के कुछ साथी पानी की खोज में स्थल पर गये तो स्पेन वालों ने हमला किया और एक अँग्रेज़ मार डाला गया। एक स्थान पर दोपहर के समय सूर्य ठीक सिर के ऊपर था। यहां मीठे पानी की खोज में ड्रेक के साथी स्थल पर उतरे। यहां उन्हें एक स्पेनवासी और एक अमरीकन मिला। ये लोग आठ लामाओं को हांकते जा रहे थे। लामा दक्षिणी अमरीका का एक विशेष जानवर है। यह गधे के बराबर होता है। लेकिन चाल ढाल में यह भेड़ के समान होता है। इन लामाओं की पीठ पर चमड़े के दो दो थैले लदे थे। प्रत्येक थैले में २५ सेर चांदी भी थी। यह सब चाँदी ड्रेक के साथियों ने लूट ली। इससे पहले भी एक दो स्थानों पर सोना चांदी लूटा गया था। कुछ दिनों की यात्रा के बाद दोपहर के समय सूर्य फिर दक्षिण की ओर होने लगा। सब लोग उत्तरी गोलार्द्ध में पहुँच गये थे। एरिका बन्दरगाह के पास तीन नावों

में चांदी लदी थी। उन नावों पर एक भी मनुष्य न था। यह सब चांदी लूट ली गई। इसके बाद ड्रेक का जहाज लीमा बन्दरगाह की ओर बढ़ा। रास्ते में स्पेन का एक जहाज मिला जिस पर मलमल के कपड़े लदे थे। ड्रेक ने कपड़ा छीन लिया और जहाज़ को जाने दिया।

१३ फरवरी को ड्रेक लीमा बन्दरगाह में पहुंचा। यहां स्पेन के १२ जहाज़ निश्चिन्त पड़े हुये थे। उन्हें इस ओर किसी शत्रु का भय न था। ड्रेक और उसके साथियों ने इन जहाजों का रेशमी और दूसरा सामान लूट कर उनके रस्से काट दिये। जिससे वे इधर उधर बहने लगे। इसके बाद अँग्रेज लोग खजाने वाले जहाज़ की ओर बढ़े। बीच में रस्सों की एक छोटी नाव लूट कर ड्रेक ने पनामा के पास खजाने का जहाज़ पकड़ लिया। इस पर हीरा, जवाहिरात बहुत था। इनके अतिरिक्त इन पर १ मन सोना और २४ टन चांदी थी। यह सब सामान छीन कर ड्रेक पश्चिम की ओर बढ़ा। यहां फिर एक जहाज मिला जिस पर रेशमी कपड़े और चीनी मिट्टी के सफेद बर्तन लदे थे। ड्रेक ने अपने पसंद का माल चुन चुन कर ले लिया और फिर जहाज़ के

कप्तान को अपने साथ लेकर उसके जहाज़ को बहने दिया स्पेनिश कप्तान ने ड्रेक को ग्वाटुलको बन्दरगाह का नाम बताया। यहां १७ स्पेन वासी थे। नगर को लूट कर ड्रेक के साथी आगे बढ़े। यहां एक ऐसा जहाज़ मिला। जिस पर दो स्पैनिश कप्तान और एक गवरनर फिलीपाइन द्वीप को जा रहे थे। लूट मार के बाद ड्रेक ने इन्हें बन्दी बना लिया। जिस पुर्तगाली कप्तान को बन्दी बनाया था और जिसकी सहायता से जहाज़ चलाने में बड़ी सहायता मिली थी वह यहीं उतार दिया गया। उत्तर की ओर ड्रेक नोवा एल्बियन स्थान तक आया। लेकिन इतनी लूट से लदे हुये जहाजों को मेजीलन प्रणाली से इँगलैंड ले जाना ठीक न था। अतः ड्रेक ने प्रशान्त महासागर को पार करने और केप आफ गुड होप के मार्ग से इँगलैंड लौटने का निश्चय किया। प्रस्थान करने से पूर्व जहाजों की भली-भांति मरम्मत की गई। यहीं अमरीका वासियों ने तम्बाकू, आलू और दूसरी चीजें अँग्रेजों को भेंट दीं।

१७ जुलाई सन् १५७९ को उत्तरी-पूर्वी हवाओं की सहायता ड्रेक ने अमरीका को छोड़ कर फिलीपाइन

द्वीपों के लिये प्रस्थान किया। ६८ दिन तक मार्ग में कहीं कोई स्थल दिखाई न दिया। अन्त में फिलीपाइन द्वीपों के लिये प्रस्थान किया। ६८ दिन तक मार्ग में कहीं कोई स्थल दिखाई न दिया। अंत में फिलीपाइन द्वीप में मिले। लेकिन ड्रेक और उसके साथी यहां न उतर कर १४ नम्बर मसाले के टापुओं में पहुँचे।

एक द्वीप का राजा ड्रेक से मिलने आया। राजा की नाव के आगे उसके सरदारों की ४ बड़ी बड़ी नावें थीं। ये लोग कालीकट के बने हुये सफेद कपड़े पहने थे। नावों पर सुन्दर सुगन्धित चटाइयों की छाया थी कुछ नावों पर तलवार और धनुष बाण लिये हुये सिपाही सवार थे। राजा गले में सोने की माला पहने था। इन लोगों ने अँग्रेजों का बड़ा स्वागत किया और साबूदाना, चावल, मुर्गियां, शक्कर, गन्ना, फल और लौंगें भेजीं। लेकिन ड्रेक और उसके साथी यहां अधिक नहीं ठहरे। जहाजों की मामूली मरम्मत करने के बाद उन्होंने प्रस्थान कर दिया। एक द्वीप में जहाज ऐसा अटक गया कि डूबते डूबते बचा। तीन टन लौंग ८ तोप और भोजन का बहुत सा सामान उतार कर

जहाज को हलका किया। हवा की दिशा बदलने पर फिर प्रस्थान किया। ड्रेक और उसके साथियों को जावा और पूर्वी द्वीप समूह के दूसरे द्वीप बड़े सुन्दर लगे। यहां तरह तरह के फलों की भरमार थी। लोग सोने चांदी के आभूषण पहने हुये थे लेकिन चावल मिट्टी के बर्तनों में पकाते थे।

जावा से प्रस्थान करने पर १८ जून १५८० ई० को ड्रेक और उसके साथी केप आफ गुड होप में पहुंचे। यह शुभ आशान्तरीप बड़ी सुहावनी थी। यहां से आगे बढ़ने पर ड्रेक की मंडली गिनी की खाड़ी पर स्थित सियरा-लिओन में पहुंची। यहां उन्होंने हाथियों का समूह और खाद्य पदार्थों का ढेर देखा। पृथिवी की परिक्रमा पूरी करने पर ड्रेक प्रायः तीन वर्ष के बाद ३ नवम्बर को फिर इँगलैंड पहुँचा। जब ड्रेक का जहाज़ प्लीमथ बन्दर-गाह पर पहुंचा तब महारानी एलिज़बेथ के सामने विकट समस्या उपस्थित थी। ड्रेक की लूट मार से स्पेन का राजा बड़ा नाराज़ हो गया था। उसे प्रसन्न करने के लिये महारानी ने वचन दिया था कि वह ड्रेक को उचित दंड देगी। इसी से ड्रेक के आने पर कुछ समय संदेह का

अवस्था में बीता अन्त में महारानी ने ड्रेक को सम्मानित करने का निश्चय किया। वह ड्रेक के जहाज पर गई और ड्रेक को नाइट बनाया। जो धन ड्रेक लूट कर लाया था उसका एक बड़ा भाग इँगलैंड की महारानी एलिज़बेथ को भी मिला।

१५८५ ई० में ड्रेक फिर पश्चिमी द्वीप समूह को गया। स्पेनिश आर्माडा के आक्रमण के समय में भारी काम किया। केडिज बन्दरगाह में पहुंच कर ड्रेक ने स्पेन के इतने जहाज नष्ट कर दिये कि स्पेन का आक्रमण कुछ समय के लिये रुक गया। दूसरे वर्ष १५८८ में जब स्पेन के आर्माडा ने इँगलैंड पर आक्रमण किया उस समय ड्रेक इंगलिश जहाजी बेड़े का उप सेनापति था। तूफ़ान और अंग्रेज़ी मल्लाहों के पराक्रम से आर्माडा विफल हुआ।

आठ वर्ष के बाद १५९६ ई० में ड्रेक अन्तिम बार पश्चिमी द्वीप समूह में स्पेन को हैरान करने के लिये गया इस बार वह यहां बीमार पड़ा और मर गया। ड्रेक अपने समय का सबसे अधिक साहसी और वीर अँग्रेज़ मल्लाह था।
